COURSE-07(a)

- PEDAGOGY OF SOCIAL SCIENCE

TOPIC:- METHODS OF TEACHING SOCIAL SCIENCE -

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में उपयोगी शिक्षण विधियाँ

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में उपयोगी शिक्षण विधियों के विवरण देने से पूर्व शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित कुछ अन्य उल्लेखनीय बातों विवरण यहाँ अपेक्षित है। अतः क्रमशः इन बातों का निम्न आलेख प्रस्तुत है —

शिक्षण एक गतिशील प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को अधिक से अधिक सीखने के अनुभव प्राप्त करना है, विद्यार्थियों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना और शैक्षिक उद्देश्यों के प्राप्ति के लिये प्रेरित करना है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मनोवैज्ञानिक खोजों के आधार पर अनेक शिक्षण नीतियों का उपयोग किया जाता है। कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिये 'शिक्षण नीतियों (strategies) का प्रयोग करना बहुत आवश्यक है।

शिक्षण नीतियाँ शब्द दो शब्दों के मेल से बना है — शिक्षण + नीतियाँ (Teaching + Strategies)। शिक्षण का अर्थ सीखना/सिखाना है तथा नीतियों का अर्थ — योजना, नीति, चतुराई कौशल इत्यादि से है। नीति एक ऐसी योजना अथवा कार्य करने का मार्ग है जिसका सम्बन्ध कार्यप्रणाली से होता है। कार्य प्रणाली एक ऐसी कौशलपूर्ण व्यवस्था है, जिसके

P.T.O.

अनुसार उद्देश्य को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। जबकि शिक्षण एक अंतः क्रियात्मक प्रक्रिया है जो कक्षागत परिस्थितियों में वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए छात्र और शिक्षकों के द्वारा सम्पन्न की जाती है। शब्दकोश के अनुसार नीति का अर्थ युद्ध कला तथा युद्ध कौशल है। अतः शिक्षण नीतियों से तात्पर्य ऐसी कौशलपूर्ण व्यवस्था से है, जिन्हें कक्षागत परिस्थितियों में शिक्षक अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तथा छात्रों के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाने के लिए करता है।

स्टोन्स और मौरिस के अनुसार — "शिक्षण-नीति, पाठ की एक सामान्यीकृत योजना है जिसके वांछित व्यवहार परिवर्तन की संरचना अनुदेशन के उद्देश्यों के रूप में सम्मिलित होती है साथ ही इसमें युक्तियों की योजनायें भी तैयार की जाती है।"

डेविस महोदय के अनुसार "नीतियाँ शिक्षण की व्यापक विधियाँ हैं।" (Strategies are broad Methods of Teaching).

शिक्षण कार्य-नीतियों की विशेषताएँ — शिक्षण कार्य-नीतियाँ अनेक प्रकार से शिक्षण प्रक्रिया में उपयोगी है जो इसकी विशेषताओं को दर्शाता है जैसे - शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति, शिक्षण कार्य के किसी प्रतिमान की और संकेत, कार्य विश्लेषण और उसकी संरचना में उपयोगी शिक्षण प्रक्रिया को सफल तथा क्रमबद्ध बनाने में उपयोगी साथ ही शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली तथा रुचिकर बनाने में उपयोगी इत्यादि। शिक्षण कार्य-नीतियाँ शिक्षक को

P.T.O.

~~कार्य~~ कार्यनिष्ठा तथा कार्यकुशलता में वृद्धि करती है। यह शिक्षण प्रक्रिया को उन्नत तथा वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

शिक्षण नीतियों का वर्गीकरण

(1) जनतांत्रिक शिक्षण नीतियाँ

(2) प्रभुत्ववादी शिक्षण नीतियाँ

(1) जनतान्त्रिक शिक्षण नीतियाँ जनतंत्र के मूल्यों पर आधारित रहती है। शिक्षण नीतियाँ बाल मनोविज्ञान का प्रयोग करके शिक्षण को बालकेन्द्रित बनाती है। इन नीतियों में शिक्षक का गौण स्थान रहता है। इसमे छात्रों को प्रमुख स्थान दिया जाता है। इसमें शिक्षक छात्रों की आयु, मानसिक योग्यता, परिपक्वता, रुचि, क्षमताओं और सामर्थ्य के आधार पर अपने शिक्षण कार्य की व्यवस्था करते है। इसमे छात्रों को अपने विचार व्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। यह कार्यनीतियाँ छात्रों को स्वतन्त्र रूप से चिन्तन करने तथा उनकी कल्पना, तर्क-निर्णय तथा सृजन आदि क्षमताओं का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

यह नीति छात्रों में सामाजिक विकास करती है। यह छात्रों को ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा गत्यात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता देती है। इस प्रकार की नीतियों में प्रमुख नीतियाँ है—

प्रश्न पूछना, उत्तर प्राप्त करना, विवेचना, योजना, गृहकार्य मस्तिष्क उद्वेलन, स्वतन्त्र अध्ययन नाटकीकरण, अन्वेषण, भूमिका निर्वहन तथा ट्यूटोरियल इत्यादि।

(2) प्रभुत्ववादी शिक्षण नीतियाँ — (कार्यनीतियाँ)
(Autocratic Strategies)

प्रभुत्ववादी शिक्षण कार्य-नीतियाँ प्रभुत्ववादी आदर्शों व मूल्यों पर आधारित हैं। इस कार्य-नीतियों में शिक्षक अधिक सक्रिय रहते हैं जिसकारण शिक्षक केन्द्रित कार्य-नीतियाँ भी कहते हैं। ~~इस कार्यनीति में~~ इन कार्यनीतियों में व्याख्यान, प्रदर्शन, टोली शिक्षण, अभिक्रमित अनुदेशन इत्यादि प्रमुख हैं।

शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods) - ऐतिहासिक इतिहास-

प्राचीन भारत में की शिक्षण-पद्धति का का मूल स्रोत वेद हैं। वैदिक युग में ब्राह्मण ऋषियों के द्वारा के द्वारा ज्ञानार्जन तथा ज्ञान-प्रसार की पद्धति भारतवर्ष में आविष्कृत हुई थी जो आधुनिक सेमीनार की सभी विशेषताओं से परिपूर्ण थी; बौद्ध शिक्षा-पद्धति में व्याख्यान एवं तर्क विधि पर बल दिया। बृहदारण्यक उपनिषद में ज्ञानार्जन की श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन की व्याख्या मिलती है। श्रवण के द्वारा गुरु के वचन को शिष्य ध्यानपूर्वक सुनता था, मनन के द्वारा उसके वचन का बौद्धिक परिग्रहण करता था तथा निदिध्यासन के द्वारा उसकी साधनात्मक अनुभूति करता था। प्रश्नोत्तर प्रणाली का वर्णन सर्वप्रथम उपनिषद साहित्य में मिलता है जिसमें शुद्ध आध्यात्मिक तत्वों का स्पष्टीकरण बड़े ही रोचक ढंग से किया गया है। यूनान के प्रसिद्ध विद्वान सुकरात की शिक्षण शैली यही थी। श्रीमद्भगवद् गीता के चतुर्थ अध्याय के 34वें श्लोक में भी प्रश्न के द्वारा ज्ञान-प्राप्ति का वर्णन किया गया है। जहाँ श्रीकृष्ण अर्जुन से

कहते हैं— "भली प्रकार दण्डवत प्रणाम तथा सेवा और निष्कपट भाव से किए हुए प्रश्न द्वारा उस ज्ञान को प्राप्त कर, वे मर्म को जाननेवाले ज्ञानीजन तुम्हें उस ज्ञान का उपदेश करेंगे— " तत् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।"

पंचतंत्र तथा हितोपदेश भी कथा कथन तथा प्रश्नोत्तर शैली के प्रतीक हैं।

अतः उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षण के जो विधियाँ प्रचलित थी वे आज के आधुनिक शिक्षण विधियों में भी उपयोगी हैं। क्योंकि उन्हीं विधियों व शैलियों का परिष्कृत रूप आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण विधियों के रूप में व्यवहृत हैं।

शिक्षण विधि शिक्षक का एक साधन है, जिसके द्वारा शिक्षक अपने शिक्षण को अधिगम की दृष्टि से अधिक रोचक और प्रभावशाली बनाता है। शिक्षण विधि एक यान्त्रिक युक्ति नहीं है जिसके द्वारा छात्रों तक तथ्य तथा आँकड़ों को पहुँचाया जाता है अपितु इसका उद्देश्य छात्रों को इस योग्य बनाना है कि वह अर्जित ज्ञान का व्यवहारिक रूप में प्रयोग कर सके तथा उसकी चिन्तन एवं सृजनात्मक शक्ति विकसित हो सके।

बाइनिंग महोदय ने शिक्षण विधि के विषय में विचार व्यक्त किया कि — "शिक्षण विधि शिक्षा प्रक्रिया का गतिशील कार्य है।"

"Methodology is a dynamic function of education." — Bening.

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार— शिक्षणविधि चाहे वह अच्छी हो या बुरी, शिक्षार्थियों छात्रों के

P.T.O-

अवयवी ढंग से घनिष्ठता स्थापित करती है। यह घनिष्ठता उसके बीच होनेवाली पारस्परिक क्रियाओं के माध्यम से स्थापित होती है। शिक्षण विधि छात्रों के मस्तिष्क पर ही प्रभाव नहीं डालती वरन उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है, अर्थात उनके कार्य तथा निर्णय, उनके बौद्धिक तथा संवेगात्मक विकास, उनकी अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को भी प्रभावित करती है। अच्छी विधियाँ मनोवैज्ञानिकता तथा सामाजिकता पर आधारित होते हैं जिसके फलस्वरूप वे छात्रों के जीवन की गुणवत्ता को उन्नत बनाती है, परन्तु बुरी विधियाँ इस गुणवत्ता को समाप्त कर देती है। अतः विधियों के चयन व निर्धारण में शिक्षकों को सदैव उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए, अर्थात वे छात्रों में किन अभिवृत्तियों तथा मूल्यों का चेतन या अचेतन रूप से विकसित करना चाहता है।"

<u>सामाजिक विज्ञान शिक्षण प्रयुक्त की जानेवाली शिक्षण विधियाँ</u>:—

प्रचलन के आधार पर समस्त विधियों को निम्न दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(1) परम्परागत विधियाँ
- (i) व्याख्यान विधि
- (ii) पाठ्य पुस्तक विधि
- (iii) कहानी विधि

(2) नवीन विधियाँ।
- (1) निरीक्षण विधि
- (2) प्रायोजना विधि
- (3) वाद-विवाद विधि
- (4) समाजीकृत अध्ययन विधि
- (5) प्रयोगशाला विधि
- (6) निर्देशित अध्ययन विधि
- (7) आगमन-निगमन विधि।
- एवं (8) समस्या समाधान विधि।

P.T.O.

Sd/- 24/04/2020

उद्देश्य के अनुसार वर्गीकरण (Based on Aims of Teaching) —

इस आधार पर समस्त शिक्षण विधियों को निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है —

उद्देश्य के आधार पर वर्गीकरण

1. ज्ञानात्मक उद्देश्य → मस्तिष्क → निम्न भाजन विधि, उच्च समस्यासमाधान विधि
2. भावात्मक उद्देश्य → हृदय या भावना → कहानी विधि, अभिनय विधि
3. क्रियात्मक उद्देश्य → क्रिया → प्रयोजनविधि

शिक्षण विधि के सम्बन्ध में 'वैसले महोदय' ने कहा — "शिक्षण विधि शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे छात्रों को ज्ञान प्राप्ति होती है।"

"In Education The word method indicates a series of Teacher directed activities that result in learning by The pupils." — Wesley.

शिक्षण विधि की विशेषताएँ — एक आदर्श शिक्षण विधि में निम्नलिखित विशेषतायें होनी चाहिए —

(1) विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सहायक
(2) क्रियाशीलता
(3) मनोवैज्ञानिकता
(4) विषय शिक्षण के उद्देश्य ~~में सहायक~~ की प्राप्ति में सहायक।
(5) व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक।
(6) सामाजिक गुणों के विकास सहायक।

— P.T.O.

(7) ~~अनुशासन~~ अनुसाशन सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं से मुक्त रहने में सहायक -

(8) मितव्ययी -

(9) व्यक्तिगत ध्यान देने में सहायक और

(10) व्यवहारिकता एवं प्रयोगशीलता ।

उपरोक्त गुणों/विशेषताओं से युक्त शिक्षण विधि एक अच्छा/आदर्श शिक्षण विधि कहलाता है।

26/05/2020